

Acharya Sushil Kumar

Acharya Sushil Kumar was a self-realized master who devoted more than 50 years to promoting non-violence, peace and knowledge of the self. Guruji (as he is lovingly called by many of his devotees) was born on June 15, 1926 in a Brahmin household in Sikhopur, a small foothill village in Haryana, India. The village was later named Sushilgarh in his honor. As a seven-year-old child, he left his home to live with Shri Chotelalji Maharaj, who later became his religious guru. Shri Roop Chandji Maharaj was spiritual guru of Acharya Sushil Kumar.

When he was 15 years old he became a Jain muni (monk) in Swetamber Sthanakwasi sect. During his academic career he mastered the classical studies of Indian religious and yogic philosophies.

As a Jain monk, he traveled on bare foot, across the length and breadth of India. He represented the Sthānakwasi Jain tradition in the making of Saman Suttam, a compilation of Jain principles that was acceptable to all sects of Jainism. He discovered and mastered the secrets of sounds behind the Namokar Mantra, an auspicious rendering that is central to Jains and wrote a book on the subject, 'Song of the Soul'. He was a poet and an author and wrote more than twenty books on Jainism and knowledge of the self.

For hundreds of years and as long as historical records are available, Jain monks did not use any mechanical means for travel. However, on June 17, 1975, Acharya Sushil Kumar made the decision to travel outside India by aircraft to spread Bhagwan Mahavir's message of Ahimsa (non-injury) and Anekantavada (belief that no one has a monopoly on truth). He traveled and taught extensively, spreading the message of non-violence and self-awareness. He established many ashrams in India and abroad.

Guruji founded many spiritual organizations, including the World Fellowship of Religions (1957) and the Vishwa Ahimsa Sangh (1957). He also founded the International Mahavir Mission (1977), Arhat Jain Sangh (1979), the World Jain Congress (1981) and the World Center of Non-Violence. He was the Honorary President of the World Conference of Religions for Peace, the director of the Temple of Understanding, a Founding Member of the Global Forum of Spiritual and Parliamentary Leaders on Human Survival, President of the Punjab Peace Unity Committee, President of the Ram Janambhoomi - Babri Masjid Solution Committee and a Founding Member of the Vishwa Hindu Parishad.

His primary ashram in North America, Siddhachalam, located in Blairstown, New Jersey, was established in 1983. Siddhachalam is regarded as the first tirtha (site of pilgrimage) outside India. He was among the founding fathers of American Jainism. In 1991, on the occasion of the Pratishta Ceremony of the main temple at Siddhachalam, various felicitation resolutions were passed by the US houses including US House of Representatives, New Jersey General Assembly, Senate of State of New Jersey etc.

Acharya Sushil Kumar was a master of meditation and the science of sound. His teaching system is called Arhum Yoga. It is an ancient system of the mastery of the inner self through watchfulness and direct perception.

Guruji had a vision of an earth united in the pursuit of ahimsa, peace and brotherhood. In 1957, he convened a World Religions Conference with more than 1200 representatives from 27 countries and 500,000 people in attendance. His work was not limited to creating religious harmony; he also received acclaim for his pioneering work in the fields of animal and environmental protection. In 1966, he initiated India's cow protection movement to signify protection of the weakest.

In 1982, he inspired the leaders of eight nations to submit a memorandum demanding peace through non-violence to the Secretary General of the United Nations. In August 1989, he was invited to inaugurate and preside over the World Hindu Conference in Britain. In the same year, he addressed the World Conference of Religions for Peace in Melbourne, Australia, advocating the dire need to protect the animal kingdom and our natural environment. In 1990, he was an honored guest at the Global Conference for Human Survival in Moscow. In 1991 he traveled to Iran in an attempt to persuade Saddam Hussein to adopt a peaceful resolution to the Gulf Crisis. At the World Parliament of Religions conference at Chicago in 1993, he delivered the keynote address where he emphasized the need to create a charter of Animal Rights for ecological balance, a key to human survival.

In 1982, the International Mahavira Jain Mission founded by him became affiliated with the United Nations and the concept of Ahimsa was adopted at the Sacred Earth Gathering as a core principle for protecting all forms of life.

Acharya Sushil Kumar journeyed around the world and he was sought after by millions for his wisdom, his loving and childlike simplicity, and for his teachings of love and brotherhood. He was known to engage in deep meditation for days at a sitting and easily traverse time, space and lives. He attained Samadhi (left his worldly body) on the 22 April 1994 in New Delhi.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Acharya Sushil Kumar and salutes his spiritual life and work for humanity, peace and self-realization.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Ms. Anjali Tegwal
Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta
Text : Referenced from content provided by Proponent



डाक विभाग
Department of Posts



आचार्य सुशील कुमार
Acharya Sushil Kumar

विवरणिका Brochure

आचार्य सुशील कुमार

आचार्य सुशील कुमार एक ऐसे आत्मबोधी गुरु थे, जिन्होंने 50 वर्ष से भी अधिक समय तक अहिंसा, शांति और आत्मज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य किया। गुरुजी (जैसा कि उनके भक्त उन्हें प्यार से पुकारते थे) का जन्म 15 जून, 1926 को हरियाणा के एक छोटे से पहाड़ी गांव शिकोहपुर के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। गुरु जी के सम्मान में आगे चलकर इस गांव का नाम बदलकर सुशीलगढ़ कर दिया गया। मात्र सात वर्ष की आयु में उन्होंने, श्री छोटेलाज जी महाराज के सान्निध्य में रहने के लिए अपना घर त्याग दिया, जो बाद में उनके धर्म गुरु बने। श्री रूप चंदजी महाराज, आचार्य सुशील कुमार के आध्यात्मिक गुरु थे।

15 वर्ष की आयु में वे श्वेतांबर स्थानकवासी संप्रदाय में एक जैन मुनि बने। अपने अकादमिक करियर के दौरान उन्होंने भारतीय धार्मिक एवं योग दर्शन के शास्त्रीय अध्ययन में महारत हासिल की।

एक जैन मुनि के रूप में उन्होंने नंगे पैर देशभर की यात्रा की। आचार्य सुशील कुमार ने जैन धर्म के सभी संप्रदायों के लिए स्वीकार्य जैन सिद्धांतों का संकलन, समन सूत्रम् तैयार करने में स्थानकवासी जैन परंपरा का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने, जैन धर्म के परम पवित्र एवं मूलमंत्र 'णमोकार मंत्र' की ध्वनि से जुड़े रहस्यों की खोजकर उन पर महारत हासिल की। आचार्य सुशील कुमार ने इस विषय पर 'सॉन ऑफ द सोल' नामक पुस्तक लिखी। वे कवि और लेखक थे, जिन्होंने जैन धर्म और आत्मज्ञान पर बीस से अधिक पुस्तकें लिखीं।

उपलब्ध ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार सैकड़ों वर्षों से जैन मुनियों ने यात्रा के लिए कभी किसी यांत्रिक साधन का प्रयोग नहीं किया। तथापि, 17 जून, 1975 को आचार्य सुशील कुमार ने भगवान महावीर के अहिंसा (चोट न पहुंचाने) और अनेकांतवाद (यह विश्वास कि सत्य पर किसी का एकाधिकार नहीं है) के संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए विमान से विदेश यात्रा करने का निर्णय लिया। उन्होंने व्यापक स्तर पर यात्राएं की और अहिंसा तथा आत्मबोध के संदेश को फैलाते हुए लोगों को शिक्षित किया। गुरु जी ने भारत और विदेश में अनेक आश्रम स्थापित किए।

गुरुजी ने वर्ल्ड फैलोशिप ऑफ रिलीजिन्स (1957) और विश्व अहिंसा संघ (1957) सहित कई आध्यात्मिक संगठनों की स्थापना की। उन्होंने इंटरनेशनल महावीर मिशन (1977), अर्द्धत जैन संघ (1979), वर्ल्ड जैन कांग्रेस (1981) और वर्ल्ड सेंटर ऑफ नॉन-वायलेंस की भी स्थापना की। वे, 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑफ रिलीजिन्स फॉर पीस' के मानद अध्यक्ष, 'टेंपल ऑफ अंडरस्टैंडिंग' के निदेशक, 'ग्लोबल फोरम ऑफ रिपरिचुअल एंड पार्लियामेंट्री लीडर्स ऑन ह्यूमन सर्वाइवल' के संस्थापक सदस्य, पंजाब शांति एकता समिति के अध्यक्ष, राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद समाधान समिति के अध्यक्ष और विश्व हिंदू परिषद के संस्थापक सदस्य थे।

उत्तरी अमेरिका में न्यू जर्सी के ब्लेयर्सटाउन में स्थित उनका प्रमुख आश्रम सिद्धाचलम, 1983 में स्थापित किया गया। सिद्धाचलम को भारत के बाहर स्थित पहला जैन तीर्थ स्थल माना जाता है। गुरु जी, अमेरिका में जैन धर्म के संस्थापकों में से एक थे। 1991 में सिद्धाचलम के मुख्य मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर यूएस हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स सहित यूएस सदनों, न्यू जर्सी जनरल असेंबली एवं सीनेट ऑफ स्टेट ऑफ न्यू जर्सी द्वारा स्वागत संकल्प पारित किए गए।

आचार्य सुशील कुमार ध्यान एवं ध्वनि विज्ञान के गुरु थे। उनकी शिक्षण प्रणाली अर्हम् योग के नाम से जानी जाती है। इस प्राचीन प्रणाली के अन्तर्गत ध्यान लगाकर और प्रत्यक्ष बोध के माध्यम से अंतर्मन पर संपूर्ण नियंत्रण प्राप्त किया जाता है।

गुरुजी का दृष्टिदर्शन एक ऐसे विश्व की संकल्पना से जुड़ा था, जो अहिंसा, शांति और भाईचारे के मार्ग पर चले। 1957 में, आचार्य सुशील कुमार ने विश्व धार्मिक सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में 27 देशों के 1200 से अधिक प्रतिनिधियों और 500,000 लोगों ने भाग लिया। उनका कार्य केवल धार्मिक सौहार्द स्थापित करने तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने पशुओं और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी अग्रगामी कार्य किया, जिसके लिए उन्हें अत्यंत मान-सम्मान प्राप्त हुआ। 1996 में उन्होंने भारत में गौरक्षा आंदोलन का सूत्रपात किया, जो समाज के दुर्बलतम वर्ग की रक्षा का प्रतीक था।

1982 में आचार्य सुशील कुमार ने आठ देशों के नेताओं को संयुक्त राष्ट्र के महासचिव को अहिंसा के जरिए शांति स्थापना की मांग के संबंध में ज्ञापन प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया। अगस्त 1989 में उन्हें ब्रिटेन में विश्व हिंदू सम्मेलन का उद्घाटन करने और सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया। इसी वर्ष, उन्होंने मेलबर्न, आस्ट्रेलिया में आयोजित 'वर्ल्ड कांफ्रेंस ऑफ रिलीजिन्स फॉर पीस' को संबोधित किया और प्राणि-जगत और प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा की महत्ती आवश्यकता के पक्ष में दृढ़तापूर्वक अपने विचार रखे। 1990 में वे, मॉस्को में आयोजित 'ग्लोबल कांफ्रेंस फॉर ह्यूमन सर्वाइवल' में सम्मानित अतिथि थे। 1991 में खाड़ी संकट के समय उन्होंने ईरान की यात्रा की और इस समस्या के शांतिपूर्ण समाधान के लिए सद्माम हुसैन को राजी करने का प्रयास किया। 1993 में शिकागो में आयोजित 'वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑफ रिलीजिन्स कांफ्रेंस' में उन्होंने मुख्य भाषण दिया, जिसमें उन्होंने मानव अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने के लिए जीव-जंतुओं के अधिकारों संबंधी चार्टर बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

1982 में उनके द्वारा स्थापित अंतरराष्ट्रीय महावीर जैन मिशन, संयुक्त राष्ट्र के साथ संबद्ध हुआ और पवित्र पृथ्वी सभा (सैक्रड अर्थ गैदरिंग) के अंतर्गत, अहिंसा की अवधारणा को अपनाते हुए सभी जीवों की रक्षा को मूल सिद्धांत के रूप में अपनाया गया।

आचार्य सुशील कुमार ने विश्वभर की यात्रा की। उनसे उनके ज्ञान का प्रकाश पाने तथा उनकी प्रेमपूर्ण एवं बाल-सुलभ सादगी तथा निश्चल प्रेम एवं भाईचारे संबंधी उपदेशों का अमृत पाने के उद्देश्य से उनके अनुयायी बने लोगों की संख्या लाखों में थी। वे कई दिनों तक लगातार गहन ध्यान में लीन रहने के लिए जाने जाते थे और समय, काल और जीवनचक्र की यात्रा सहज ही कर लेने की क्षमता रखते थे। उन्होंने एकाकी जीवन का त्याग कर लोगों को आध्यात्मिक रूप से जाग्रत करने में मदद की। गुरु जी ने 22 अप्रैल 1994 को नई दिल्ली में समाधि (सांसारिक शरीर का त्याग) ली।

डाक विभाग, आचार्य सुशील कुमार पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और उनके आध्यात्मिक जीवन के साथ-साथ मानवता, शांति एवं आत्मबोध की दिशा में किए गए उनके कार्यों को सलाम करता है।

आभार

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : सुश्री अंजली तेगवाल

विवरणिका

विरूपण केशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ

: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 421220
Stamps Printed	: 421220
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00